'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 117- Literature & Translation
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

अनुवाद साहित्य में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

प्रा. डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचलित,
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड, जि. नाशिक
फोन : ९९२२१३५७३५

प्रा. डॉ. जालिंदर इंगले
शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगाव कॅम्प ता. मालेगाव
जि. नाशिक

प्रस्तावना-

आधुनिक युग में एक से अधिक भाषाओं का अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण हो गया है । शिक्षा, समाज और संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व अनन्यसाधारण है । अनुवाद प्रक्रिया अब एक नयी ज्ञानशाखा के रुप में समाज सन्मुख प्रस्तुत हो रही है । सामान्य रुप से एक भाषा की सामग्री दुसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद है, अथवा किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दुसरी भाषा में यथावत प्रस्तुत करना अनुवाद है । अनुवाद प्रक्रिया प्राचीन काल से चलती आ रही है । संस्कृत के 'वद्' धातु को 'अनु' उपसर्ग जोडने के कारण अनुवाद शब्द का निर्माण हुआ । प्राचीन संस्कृतशास्त्रों में अनुवाद चिन्तन की लम्बी परम्परा है । अनुवाद भले ही ज्ञान, विज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक होता है, लेकिन अनुवाद एक सांस्कृतिक कार्य भी है । व्यावहारिकता से परे जो बाते होती है उनका संस्कृति में विशेष महत्व होता है । किसी भी देश के विकास में संस्कृति का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । देश की संस्कृति, उसकी प्रथा परंपराएँ, मूल्य विश्वास का प्रतिनिधित्व करते है । संस्कृति मनुष्य को जो है, उससे बेहतर बनाने का कार्य करती है और संस्कृति जानने समझने और परखने के लिए अनुवाद का सहारा लेना पडता है । क्योंकि कहा जाता है कि अनुवाद की सबसे बडी आवश्यकता धर्म, दर्शन, साहित्य और कला के प्रचार हेतु ही हुई । सांस्कृतिक अनुवाद की आवश्यकता तात्कालिक न होकर भावनिक होती है । इसलिए यहाँ पर अनुवाद के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को निम्नलिखित संदर्भो द्वारा स्पष्ट करेंगे ।

धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र -

हर एक संस्कृति में धर्म को अत्याधिक महत्व रहता है । अपने अपने धर्म के अपने अपने धर्मग्रंथ भी होते है । धर्म का एक मुख्य अंग है नैतिकता और मानवता । इसी अंग को हर एक धर्मग्रंथ का मूलाधार माना जाता है ।

प्राचीन युग से धर्मग्रंथो के अनुवाद होते आए है । धर्मो के प्रचार प्रसार के लिए धर्मगंथों का अनुवाद कई शताब्दियों से होता आ रहा है । जिन धर्मो का प्रचार प्रसार मूल धर्मग्रंथ की भाषा से भिन्न भाषिकों में हुआ वहाँ उन धर्मग्रंथों के अनुवाद आवश्यक हो गए। ईसाई धर्म के बाइबल, इस्लाम के कुरान शरीफ, बौद्धों के त्रिपीटक आदि अनेक भाषाओं में अनुदित हुए । बाइबल इब्रानी, अरामी और युनानी भाषा में लिखी गयी थी । बाइबल पढनेवाले जादातर इन भाषाओं को नही जानतें, इसलिए आज पूरी बाइबल या उसके कुछ हिस्से करीब २६०० भाषाओं में पाए जाते है । "पवित्र कुरान शरीफ का अनुवाद अधिकांश आफ्रिकी एशियाई और युरोपीय भाषाओं में किया गया है ।"[१] "कुरान का पहला अनुवादक सलमान फारसी था, जिसने सातवी शताब्दी के दौरान सूरत अल-फतिहा का अनुवाद फारसी में किया था ।"[२] अहमदीय मुस्लीम समुदायने लगभग पचास अलग अलग भाषाओं में कुरान के अनुवाद प्रकाशित किए है ।

भारतीय धर्म-दर्शन के ग्रंथो के अनुवादों से ही दुनिया को भारतीय चिन्तन और अध्यात्म की गहराई का पता चला । अनुवादों के कारण ही भारतीय संस्कृति अन्यत्र देशों में पहुँच सकी । प्लेटों, सॉक्रेटीस, ऑरिस्टॉटल, कांट, हेगेल, मार्क्स जैसे विदेशी विचारवंतों और भारतीय षडदर्शनों के अनुवादों की बुनियाद पर ही चिन्तन की परंम्परा को आगे बढाया जा सकता है और संस्कृति का प्रचार प्रसार हो सकता है ।